ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

प्राचीन भारत में महिला शिक्षा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

An Analytical Study of Women's Education in Ancient India

Paper Submission: 16/12/2020, Date of Acceptance: 28/12/2020, Date of Publication: 29/12/2020

किरण शर्मा
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत का प्राचीन इतिहास हजारों वर्षों का कालखंड रहा है । प्राचीन इतिहास राजनीतिक रूप से पूर्ण नहीं है, किंतु सामाजिक दृष्टि से समृद्ध शाली रहा है। मानव का अनादि लेखन इतिहास वैदिक काल से प्रारंभ होता है किंतु ज्ञात एवं अज्ञात खंड अवशेषों के आधार पर पूर्व वैदिक काल अर्थात प्रागैतिहासिक काल की जानकारी भी प्राप्त होती है। प्राचीन भारतीय इतिहास में महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकार, कर्तव्य, सामाजिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता ,आर्थिक व शैक्षणिक स्थिति का बोध करने के लिए प्राचीन वैदिक साहित्य का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है।

The ancient history of India has been a period of thousands of years. Ancient history is not politically complete, but has been socially prosperous. Human writing history begins from Vedic period but based on known and unknown fragment remains, information about pre-Vedic period i.e. prehistoric period is also obtained. To understand the status of women, their rights, duties, social and political freedom, economic and educational status in ancient Indian history, it becomes necessary to observe ancient Vedic literature.

मुख्य शब्द : प्राचिन काल, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, महिला राजनीतिज्ञ, चिकित्सा शिक्षा, सैनिक शिक्षा।

Oriental Period, Women Education, Women Empowerment, Women Politicians, Medical Education, Military Education

प्रस्तावना

वैदिक कालीन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करने से इस समय की सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है । महिला शिक्षा के लिए वैदिक काल स्वर्ण काल माना जाता था । इस काल में महिलाएं स्वतंत्र रहकर प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करती थी। किसी भी प्रकार से महिला– पुरुष में भेदभाव नहीं किया जाता था । इस काल की सामाजिक स्थिति में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। महिला के सभी रूपों का समाज में आदर किया जाता था। सामाजिक व्यवस्था लचीली होने के कारण महिलाओं पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं था।

समाज में महिलाओं के खिलाफ रूढ़िगत प्रथाएं प्रचलित नहीं थी। वेदों में अनेक स्थानों पर महिलाओं से संबंधित विवरण प्राप्त होते हैं। महिलाओं का विवाह शिक्षा प्राप्ति के बाद ही होता था। महिला शिक्षा की सर्वप्रथम झलक इसी युग में देखने को मिलती है। इस काल में बालिका शिक्षा दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसका प्रमाण हमें वेदों से प्राप्त होता है। अनेक धार्मिक ग्रंथों तथा वेदों में ऋषिकाओ का उल्लेख मिलता है। अनेकों विदुषी महिलाओं ने वेदों की रचनाओं में अपना योगदान दिया। इन महिलाओं में प्रमुख है– सूर्या, अपाला, लोपामुद्रा ,विश्ववारा, संध्या ,यमी, देवयानी ,सची ,अदिति आदि है, जिन्होंने वेदों में अपनी छाप छोड़ी।[1] इस काल की अदिति स्वयं चारों वेदों की प्रकांड विदुषी थी । विश्ववारा भी इन्हीं के समान विदुषी महिला थी ,जिन्होंने वेदों की शिक्षा के बल पर ऋषित्व का सम्मानित पद प्राप्त किया। इन्हीं के समान महान विदुषियों में ताप्ती भी पीछे नहीं है, इनका उल्लेख भी वेदों में

प्रमुखता से हुआ है । इसी क्रम में अभृंण ऋषि की पुत्री वाक् का उल्लेख भी होता है, जिन्होंने तत्कालीन समय में अन्न पर अनेक शोध किए तथा नए नए किस्म के बीजों का आविष्कार किया। घोषा नामक विदूषी ने ऋग्वेद के दसवें मंडल के 39वे 40 वे सुक्त की रचना की। ऋषिका रोमशा ने ऋग्वेद के 1/27/7 मंत्रो की रचना की। विदूषी विश्ववारा ने 5/28 मंत्र की रचना की। इंद्राणी द्वारा 10/45 मंत्र की रचना की गई।

शची द्वारा 10/159 मंत्र की रचना की गई।9/59 मंत्र की रचना अपाला ऋषिका द्वारा प्रस्तुत की गई। दिर्घतमा ऋषी की पत्नी उशिज ने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के अनेक मंत्रो का अनुसंधान किया। [2]राजा कुश ध्वज की पुत्री वेदवती ने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया ।इस काल में महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता था । यह युग स्त्री शिक्षा के लिए पराभव का युग था। वेदों के प्रमाण से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में शिक्षा स्त्री पुरुष सभी के लिए समान थी। पुत्र पुत्री को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था तथा दोनों का उपनयन संस्कार होने के पश्चात ही शिक्षा प्रारंभ होती थी। [3]अनेक विदुषी महिलाएं राज सभाओं में विद्वानों से धर्म विषयक शास्त्रार्थ भी करती थी। इससे विश्लेषित होता है कि महिला शिक्षा के लिए वैदिक काल स्वर्ण काल था। इस काल में 20 महिलाओं द्वारा ऋग्वेद की रचना में सहयोग किया गया। [4] अतः विश्लेषित होता है कि वैदिक कालीन महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त करती थी तथा वेदों के निर्माण में सहयोग भी देती थी। महिलाओं को सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी ।ऋग्वेद में विशपाला के सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के प्रमाण मिलते हैं। [5] वैदिक कालीन महिलाओं की सामाजिक स्थिति के साथ राजनीतिक स्थिति भी स्पष्ट होती है कि उच्च शिक्षित महिलाएं राजकीय कार्यों में राजाओं को राजनीतिक सलाह भी देती थी। [6]अतः स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में महिलाएं शिक्षा के साथ महान शासिका एवं योद्धा के रूप में भी अग्रणी भूमिका निभाती थी। स्वतंत्रता पूर्वक अपने जीवन का निर्वाह करती थी।

उत्तर वैदिक काल में वैदिक काल की परंपरागत शिक्षा पद्धति बनी रही। वैदिक काल की भांति उत्तर वैदिक काल में भी स्त्री को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था । समाज में पुत्री जन्म पर खिन्नता अनुभव की जाती थी किंतु शिक्षा एवं पालन पोषण की उपेक्षा नहीं होती थी। पुरुष अपने पूर्णता नारी द्वारा ही संभव मानते थे [7]किंतु महिलाओं की स्थिति में विरोधाभास भी देखने को मिलता है। महिलाओं को न तो धार्मिक कार्यों और न ही राजनीतिक कार्यों के लिए आवश्यक माना जाता था। [8] उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा के लिए शुभ अवसर प्रदान किया जाता था। इस काल की महिलाएं वेद अध्ययन का अधिकार रखती थी [9] किंतु इस समय तक अधिकांश शिक्षा की प्राप्ति परिवारों में रहकर ही महिलाएं ग्रहण करती थी। गुरुकुलो में महिला शिक्षा कम हो गई थी। इस काल की गार्गी , मैत्रेयी पूर्ण शिक्षा प्राप्त महिलाएं थी। मैत्रेयी ने अपनी शिक्षा के कारण याज्ञवल्क्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया। [10] यह सब स्त्री शिक्षा के कारण ही संभव था।इस युग में महिलाओं की शिक्षा दीक्षा पर ध्यान दिया जाता था। अतः महिला शिक्षा के लिए इस काल में भी अनेक अवसर थे। विदुषी महिलाओं का समाज में सम्मान किया जाता था । इस काल की विदुषी महिलाएं गार्गी, मैत्रयी , सुलभा आदि थी, जो महिला शिक्षा में अग्रणी भूमिका निभाती थी। किंतु शतपथ ब्राह्मण में यह विधान भी दिया गया था कि प्रावग्य अनुष्ठान के समय राजा को महिला तथा शूद्र से मिलना नहीं चाहिए । [11] इस प्रकार कुछ ग्रंथों से स्पष्ट होता है कि महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों में उपस्थित होने की अनुमति नहीं थी।

महिलाओं की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया जाने लगा था। महिलाएं पहले की भांति राज सभाओ एवं सम्मेलनों में उपस्थित नहीं होती थी। [12]महाकाव्य काल में महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में स्वतंत्रता प्राप्त थी। इस काल के महाकाव्य में रामायण तथा महाभारत का उल्लेख विशेष रूप से होता है ।उपर्युक्त महाकाव्यों की पृष्ठभूमि के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महिलाओं की स्थिति समाज में सम्माननीय थी। महाभारत में भीष्म पितामह नारी को पूज्य मानते थे। [13]कन्याओं की उपेक्षा इस काल में नहीं की जाती थी ।रामायण में राजा जनक द्वारा सीता का लालन–पालन बड़े ही स्नेह पूर्ण तरीके से किया गया। [14] कन्या को समृद्धि का सूचक माना जाता था। बालक– बालिका में भेद इस काल में दृष्टिगोचर नहीं होता

। महाभारत में शुक्राचार्य अपनी पुत्री देवयानी को प्रसन्न करने के उद्देश्य से अपने प्राणों की आहुति देने के लिए भी तत्पर हो जाते हैं। [15] महाकाव्य काल की महिलाओं की शिक्षा दीक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता था । इस समय भी विदूषी महिलाओं के धर्म सभाओं में उपस्थित होने के प्रमाण मिलते हैं। रामायण में सुलभा, राजा जनक के राज्य की परम विदुषी महिला थी। इन्होंने शास्त्रार्थ में राजा जनक को हराया तथा बालिका शिक्षा को महत्व देते हुए अनेक शिक्षणालयो की स्थापना भी की। [16] निश्चित रूप से महिला शिक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता था। इस समय की परम विदुषी महिलाओं में गार्गी, मैत्रेय, विद्योतमा, लीलावती, भारती, विज्जिका आदि थी। [17] विदुषी विधोतमा शास्त्रार्थ में प्रसिद्ध महिला थी। महाभारत में शकुंतला राजा दुष्यंत को पत्नी के महत्व और अधिकारों की बात बताती है। [18] ऐसे तर्क शकुंतला के शिक्षित होने के प्रमाण को पुष्ट करते हैं। रामायण में मंदोदरी भी अपने पति रावण को अनीति के दुष्परिणामों के बारे में चेतावनी देती थी। युधिष्ठिर ने जब द्रौपदी को दांव पर लगाया, तब दुशासन द्रौपदी को सभा में लेकर आता है। उस समय द्रोपदी वहां उपस्थित गुरुजनों से बुद्धिमता पूर्ण तर्क प्रस्तुत करती है। [19] यह तर्क द्रोपदी के पूर्ण शिक्षित होने की ओर इंगित करते हैं । अतः स्पष्ट होता है कि महाकाव्य कालीन परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया जाता था। महिलाओं को वेद अध्ययन के साथ ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी ।क्षत्रिय महिलाओं को शिक्षा के साथ युद्ध विद्या, धनुर्विद्या की शिक्षा भी दी जाती थी। [20] कैकेयी ने देव दानव युद्ध में राजा दशरथ की प्राथमिक चिकित्सा की, जो महिलाओं की चिकित्सा शिक्षा की व्यवस्था की ओर

इशारा करती है। [21] इस प्रकार महाकाव्य काल में भी महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाता था। किसी भी प्रकार का प्रतिबंध महिलाओं पर नहीं लादा जाता था। किंतु महाकाव्यों में ही महिलाओं को वस्तुओं की भांति दांव पर लगाना, सीता का परित्याग करना, यह सब बातें महिलाओं के कमजोर होते पक्ष को उजागर करती है।

भारतीय संस्कृति की यह सबसे बड़ी विशेषता रही है। यहां की संस्कृति और धर्म की जड़े सदैव नए दर्शन का प्रादुर्भाव करती है। नए दर्शन के रूप में बौद्ध धर्म का आविर्भाव हुआ । बौद्ध काल में भी महिला –पुरुष के मध्य भेद नहीं किया जाता था।महात्मा बुद्ध ने पहले तो महिलाओं को संघ में शामिल होने की अनुमति नहीं दी परंतु प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर महिलाओं को भी संघ में प्रविष्ट होने की अनुमति प्रदान की। [22] इससे विश्लेषित होता है कि समाज में स्त्री पुरुष के मध्य विभाजक रेखा नहीं थी । बौद्ध कालीन परिस्थितियों में बालक की भांति बालिकाओं का भी पालन पोषण तथा शिक्षा दीक्षा का ध्यान रखा जाता था। [23] विश्लेषित होता है कि बौद्ध काल में बालिका शिक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता था। बौद्ध संघों में शामिल महिलाओं को भिक्षुणी कहा जाता था। इन संघो में महिलाओं की शिक्षा का प्रबंध किया जाता था। कुछ महिलाएं शिक्षा ग्रहण कर बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में सहायता भी करती थी सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु श्रीलंका तक गई। [24] कुछ बौद्ध जातकों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है की उच्च शिक्षित महिलाएं धर्म संबंधी वाद विवादों में भी भाग लेती थी। बौद्ध काल में भिक्षुणी खेमा उच्च शिक्षा प्राप्त महिला थी। [25] अतः संघों का महिला शिक्षा में अतुलनीय योगदान था। शिक्षा को सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक मानते हुए विभिन्न संघों में महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी किया जाता था । वेदों के अतिरिक्त भिक्षुणी संघ की थैरियो द्वारा भी थैरी गाथा का लेखन कार्य प्राप्त होता हैं। थैरी गाथा में विभिन्न वर्णों की 32 महिलाओं द्वारा लेखन करना प्रमाणित होता है। इनमें खेमा, सुमना, सैला, सुमेधा आदि कौशल तथा मगध एवं आल्वीवंश से संबंधित महिलाएं थी। महाप्रजापति गौतमी, तिष्या, अभिरुपा, शाक्य आदि सामंती कन्याएं थी। मैत्रिका, अन्यतरा, उत्तमा, चाला, ब्राह्मण महिलाएं थी ।पूर्ण चिता, श्यामा ,उर्वशी वैश्य वर्ग की महिलाएं थी। [26] इस प्रकार अनेक वर्गों की महिलाओं द्वारा लेखन कार्य प्राप्त होता है ।जो महिलाओं के शिक्षित होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्राचीन काल में महिलाओं के लिए समाज तथा शासकों के द्वारा प्रयत्न किये गए। समाज का सहयोग भी महिलाओं को शिक्षित करने में सफल रहा। प्राचीन कालीन समाज स्त्री–पुरूष में भेद को स्वीकार नहीं करता था। दोनो सहचर्य की अपेक्षा करते थे। अतः महिलाओं को शिक्षित करने में प्राचीन धर्म, संस्कृति का सहयोग भी रहा। इस काल में महिलाओं को चिकित्सा शिक्षा, सैनिक शिक्षा तथा आयुर्वेद की शिक्षा भी दी जाती थी।

निष्कर्ष

संक्षेप में स्पष्ट होता है कि प्राचीन कालीन भारत में महिला शिक्षा पर अवश्य ध्यान दिया जाता था । बालक –बालिका में भेद किए बिना शिक्षा प्रदान की जाती थी । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री– पुरुष दोनों समान अधिकारों का उपभोग करते थे।प्राचीन काल की शिक्षा पद्धति में बालक बालिकाओं के लिए ऐसे पाठ्यक्रम का प्रबंध किया जाता था, जिसके अंतर्गत बौद्धिक विकास के साथ–साथ मानसिक तथा शारीरिक विकास भी हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पांडे, डॉ सरोजिनी भारतीय धर्म ,समाजऔर नारी ग्रंथम, कानपुर ,2003,P–9,10*
2- *www.researchtrend.net*
3. *अल्टेकर, ए एस पोजिशन ऑफ वूमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन मोती लाल, बनारस,12वा संस्करण, 2016,P–11,12*
4. *ऋग्वेद,111/55*
5. *ऋग्वेद,1/112/10*
6. *शर्मा, प्रज्ञा भारतीय समाज में नारी पोइंटर पब्लिकेशन, जयपुर,2001,P–14*
7. *बृहदारण्यक,1/4/3*
8. *मिश्र, रोहित समाज, कार्य एवं महिला सशक्तिकरण न्यू रॉयल बुक डिपो, लखनऊ,1999,P–42*
9. *शतपथ ब्राह्मण,1/2/14/13*
10. *उपाध्याय, आचार्य बलदेव वैदिक साहित्य और संस्कृति शारदा संस्थान, वाराणसी,1998,P–425*
11. *ओमप्रकाश,प्राचीन भारत का सामाजिक, आर्थिक इतिहास पंचम संस्करण, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001,P–181*
12. *एतरेय ब्राह्मण,15/25*
13. *महाभारत,5,38/10*
14. *वाल्मीकि रामायण,2/118/28/291*
15. *महाभारत,1/80/9/10*
16. *वृहदरण्यक,3/6/1*
17. *भार्गव, वी एसप्राचीन भारत का इतिहास दिल्ली,1972,P–72*
18. *महाभारत,1/74/390*
19. *महाभारत, सभापर्व, अध्याय–69*
20. *वाल्मीकि रामायण,2/26/4*
21. *रामायण, अयोध्या काण्ड, सर्ग–10, श्लोक–89*
22. *भार्गव वी एस प्राचीन भारत का इतिहास दिल्ली,1972,P–65*
23. *पांडे, श्री नेत्र भारतवर्ष का वृहद इतिहास लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1956,P–209*
24. *सिंह, उर्मिला प्रकाश भारत में नारी मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ एकैडमी, भोपाल,1987,P–3*
25. *मिश्र, जयशंकर प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार, 2003,P–418*
26. *राजे, डॉ सुमन हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2006,P–89*